पाश्चात्य दर्शन का इतिहास

History of Western Philosophy

TDC Part-II

डॉ. विजय कुमार

दर्शनशास्त्र विभाग

लंगट सिंह कॉलेज, मुजफ्फरपुर

बेनेडिक्टस स्पिनोजा

(Benedictus Spinoza)

पर्याय की अवधारणा

(Concept of Modes)

स्पिनोजा के अनुसार सत्य एक है, फिर भी हमारे व्यावहारिक जीवन में जो अनेकता का बोध होता है, उसकी अनुभूति होती है, उसका कारण कया है? इसका उत्तर देते हुए स्पिनोजा कहते हैं कि पर्याय के कारण ही हमें जगत् में नानात्व की अनुभूति होती है। पर्याय का अर्थ है द्रव्य का विकार, जो द्रव्य का ही परिवर्तित रूप है, जिसका अस्तित्व स्वतंत्र नहीं एवं जिसकी भावना के लिए किसी अन्य भावना की आवश्यकता है। विकार द्रव्य के आगन्तुक धर्म हैं, वास्तविक नहीं। जिस प्रकार असीम देश पर त्रिभुज का अस्तित्व आधारित होता है, बिना असीम देश के त्रिभुज की कल्पना नहीं की जा सकती, उसी प्रकार विकार भी अपने अस्तित्व के लिए ईश्वर पर आधारित है। पर, बिना वस्तु के विकार की कल्पना असंभव है किन्तु बिना विकार के वस्तु का अस्तित्व संभव है। यदि हम समुद्र के तरंगों को ही देखें तो हम तरंगों के बिना समुद्र की कल्पना कर सकते हैं पर समुद्र के बिना तरंगों की कल्पना संभव नहीं है।

द्रव्य या ईश्वर अपरिवर्तनशील है, वह अपने अस्तित्व को परिवर्तनशील विकारों के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। प्रत्येक विकार एक-दूसरे के कारण हैं। स्पिनोजा ने अपने हर पहलू को ज्यामितीय विधि के द्वारा सुलझाने का प्रयास किया है। उनका कहना है कि यदि हम एक आलेख लेते हैं जिस पर अनेक असंख्य वर्गाकृतियाँ बनी हुई होती हैं, पुनः यदि उन आठ वर्गों को भी देखा जाए तो वे भी अपनी चारों ओर के वर्गों से घिरे होते हैं। ठीक इसी प्रकार एक विकार दूसरे विकार का कारण होता है। जिस प्रकार आलेख पर किसी भी वर्ग का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता है उसी प्रकार कोई भी विकार स्वतंत्र नहीं है।

स्पिनोजा ने भी विकार को दो रूपों में विभाजित किया है–असीम विकार (Infinite modes) और ससीम विकार (Finite modes)। ईश्वर जब अपनी अभिव्यक्ति असीम विचार या असीम विस्तार के रूप में करता है तब वह परिवर्तन असीम विकार कहलाता है। चूँकि ईश्वर एक असीम सत्ता है इसलिए जब भी वह अपनी अभिव्यक्ति चैतन्य या विस्तार के रूप में करेगा तो वह चैतन्य या विस्तार असीम ही होंगे? इसी तरह जब ईश्वर अपनी अभिव्यक्ति व्यक्ति विशेष के रूप में करता है तो वह परिवर्तन ससीम विकार कहलाता है। अतः एक से अनेक तथा ससीम से असीम की व्याख्या के लिए पर्याय की सत्ता मानना आवश्यक है।